TEACHERS OF BIHAR

पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

अप्रैल 2026 | अंक 20

मासिक कविता संग्रह

ई-पत्रिका तक
पहुँचने हेतु QR
कोड को स्कैन करें

Reg. No. BR/2025/0487469

अस्वीकरण

- पद्यपंकज मासिक पत्रिका जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से नि:शुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

संपादक मंडल

संरक्षक

डॉ० चन्दन श्रीवास्तव

सहायक आचार्य (शिक्षा), काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

एवं

शैक्षिक समन्वयक,

भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

संपादक

राम किशोर पाठक

प्रधान शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, बिहटा

अनुपमा प्रियदर्शिनी

रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपर, सिवान

तकनीकी सहयोग

ई o शिवेंद्र प्रकाश सुमन

मार्गदर्शक

शिव कुमार

उत्क्रमित मध्य विद्यालय

नारायणपुर, बिक्रम, पटना

संरक्षक का संदेश

“पद्यपंकज” केवल एक मासिक ई-मैगज़ीन नहीं, बल्कि शिक्षा, साहित्य, संस्कृति और सृजनात्मक अभिव्यक्तियों का एक सशक्त एवं प्रेरणादायी मंच है।
टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा प्रकाशित यह सुंदर प्रयास शिक्षकों, विद्यार्थियों तथा साहित्यप्रेमियों की प्रतिभाओं को नई उड़ान देने का कार्य कर रहा है।

आज के डिजिटल युग में जहाँ सकारात्मक एवं ज्ञानवर्धक सामग्री की आवश्यकता निरंतर बढ़ रही है, वहाँ “पद्यपंकज” अपनी उत्कृष्ट रचनाओं, विचारों, कविताओं, लेखों एवं शैक्षणिक सामग्री के माध्यम से समाज को एक नई दिशा प्रदान कर रहा है। यह मंच न केवल रचनात्मकता को प्रोत्साहित करता है, बल्कि शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच साहित्यिक एवं बौद्धिक चेतना को भी सशक्त बनाता है।
हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ हैं कि “पद्यपंकज” निरंतर सफलता की नई ऊँचाइयों को स्पर्श करे, शिक्षा एवं साहित्य जगत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखे तथा आने वाले समय में और अधिक लोगों को प्रेरित करता रहे।

सम्पूर्ण संपादकीय टीम, सभी रचनाकारों एवं सहयोगियों को इस सराहनीय पहल के लिए हृदय से बधाई एवं अनंत मंगलकामनाएँ।

चन्दन श्रीवास्तव

डॉ० चन्दन श्रीवास्तव
सहायक आचार्य (शिक्षा),
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
एवं
शैक्षिक समन्वयक,
भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय,
भारत सरकार

शुभकामना संदेश

"पद्यपंकज" जैसी पत्रिका शिक्षकों की उस रचनात्मकता और सोच को सामने लाती है, जो अक्सर उनके पाठ्यक्रम और जिम्मेदारियों के बीच छिपी रह जाती है। यह जानकर बहुत खुशी हुई कि हमारे शिक्षकगण, अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच भी साहित्य और लेखन के प्रति इतनी संवेदनशीलता और समर्पण दिखा रहे हैं।

यह पत्रिका सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत दस्तावेज़ है, जो शिक्षा, विचार और भावनाओं के मेल से बना है। इसमें छपी हर रचना, एक शिक्षक के अनुभव, उसकी सोच और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को दर्शाती है।

"पद्यपंकज" की पूरी टीम, संपादक मंडल और इसमें सहयोग देने वाले सभी शिक्षकों को मेरी ढेरों शुभकामनाएँ। उम्मीद करती हूँ कि यह प्रयास यूँ ही आगे बढ़ता रहे और नई पीढ़ी को एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता रहे।

13/04/25

डॉ. रश्मि प्रभा
पूर्व संयुक्त निदेशक
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

शुभकामना संदेश

“पद्यपंकज” जैसी रचनात्मक पहल यह सिद्ध करती है कि शिक्षक न केवल ज्ञान के दीप प्रज्वलित करते हैं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक चेतना को भी जीवंत बनाए रखते हैं। यह पत्रिका उन भावनाओं, विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जो शिक्षकों के हृदय में पलती हैं और साहित्य के रूप में साकार होती हैं।

ऐसी पत्रिकाएँ शिक्षा को केवल पुस्तकों की परिधि में नहीं बाँधतीं, बल्कि सोच, अभिव्यक्ति और संवेदना को विस्तार देती हैं। यह प्रशंसनीय है कि हमारे शिक्षक अपनी व्यस्त दिनचर्या के साथ-साथ सृजनात्मक साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा देने का कार्य कर रहे हैं।

मैं “पद्यपंकज” पत्रिका से जुड़े सभी शिक्षकों, संपादक मंडल और रचनाकारों को इस पुनीत कार्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका निरंतर पल्लवित और पुष्पित होती रहे, यही मेरी कामना है।

डॉ. स्नेहाशीष दास
विभागाध्यक्ष,
विद्यालयी शिक्षा विभाग
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

संपादकीय

पुस्तक सच्चा मित्र है, लाभुक है संसर्ग।
दिखलाकर सन्मार्ग यह, निर्मित करता गर्ग।।
अँध भाव संशय सभी, पुस्तक करता नाश।
आरोहित करता सदा, ज्ञान ध्वजा आकाश।।

मित्रों, एकबार पुनः आपके बीच सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की लेखनी से निकली ज्ञान सरिता के कुछ बूँदों को भरकर मैं मासिक पत्रिका पद्यपंकज की अप्रैल माह का अंक "पुस्तक" विशेषांक के रूप में लेकर प्रस्तुत हूँ। अप्रैल माह में पूरी दुनिया विश्व पुस्तक दिवस मना रही थी। हमारे शिक्षक वृंद कहाँ पीछे रहने वाले थें।

पुस्तक ज्ञान का पर्याय है। आदिकाल से पुस्तकों में ज्ञान को संजोकर नयी पीढ़ी को प्रदान करने का सिलसिला चल रहा है। कुछ सभ्यताओं के नष्ट होने से पुस्तकों की भी क्षति हो जाती है। पुनः सभ्यता के विकास के साथ शिलालेख, ताम्र पत्र लेखन, कागजी लेखन गतिमान होता है। आज के आधुनिक काल में तो डिजिटल पुस्तक का भी प्रचलन काफी बढ़ गया है।

पुस्तक, ज्ञान प्रसार का एक सहज स्रोत है। यह हमारे मनोविकार को हरकर, संशय को मिटाकर सदैव सच्चे मित्र की तरह लक्ष्य प्राप्ति में हमारा सहयोग करता है। तो आइए इस अंक में हम कवियों की कल्पनाशीलता एवं उनके विचारों में पुस्तक की उपादेयता को समझें।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस अंक को भी हमारे सुधि पाठकों का भरपूर प्यार मिलेगा।

करके संग्रह ज्ञान का, बने ज्ञान का स्रोत।
पुस्तक पढ़ दिनकर बनें, रहे नहीं खद्योत।।
कहती पुस्तकधारिणी, गहो अगर यह हाथ।
धीरे-धीरे ही सही, चमक उठेगा माथ।।

राम किशोर पाठक

उत्क्रमित मध्य विद्यालय, पालीगंज,
बिहटा, पटना

संपादकीय

काव्य, जो कम शब्दों में बहुत कुछ कह जाती हैं और शायद इसे ही साहित्य की वास्तविक पहचान बोलते हैं। पद्यपंकज के इस अप्रैल अंक में हम ऐसे ही शिक्षाप्रद काव्यों को आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं, जो शब्द की सुंदरता के साथ साथ जीवन के मूल्यों को भी उजागर करने का काम करती है।

हम सब जानते हैं कि शिक्षा केवल किताबें से नहीं, बल्कि लोगों के विचार, उनके व्यवहार और बड़ों के अनुभव से भी प्राप्त किया जा सकता है। इस अंक में शामिल कविताएँ विद्यार्थी, अभिभावक और शिक्षकों के लिए भी प्रेरणास्रोत का काम करेगी।

इस अंक में शामिल सभी रचनाओं के रचनाकारों को मैं हृदय की गहराइयों से धन्यवाद देना चाहती हूँ, जिन्होंने अपने कलम की शक्ति से इस अंक को समृद्ध बनाया। आपने अपने विद्यालय में शिक्षा को बढ़ावा देने के साथ साथ अपनी लेखनी से भी जीवन की मूल्यों का संदेश दे रहे हैं। आपको जितना धन्यवाद दिया जाए वो कम है।

मैं आप सभी पाठकों का भी हार्दिक धन्यवाद देना चाहती हूं जिन्होंने ऐसे कविताओं को अपने हृदय में स्थान दिया और इसका आत्मसात कर अपने जीवन में परिवर्तन की ओर अग्रसर होंगे। उम्मीद है कि आप सभी ऐसे ही हमारा साथ देंगे और इस पद्यपंकज के काव्यात्मक यात्रा में हमारे साथ अग्रसर होंगे।

अनुपमा प्रियदर्शिनी
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय दूधहन ,
ररघुनाथपुर, सीवान

अनुक्रमणिका

रचना	रचनाकार	पृष्ठ सं०
किताबें	रुचिका	9
डाली के फूल	आशीष अम्बर	10
किताब	नीतू रानी	11
कलम से प्यार	रत्ना प्रिया	12
पौधे सुन्दर लहराते हैं	राम किशोर पाठक	13
विकसित भारत	गिरीन्द्र मोहन झा	14
Water wouldn’t sound so melodious	आशीष कुमार पाठक	15
पुस्तक	राम किशोर पाठक	16
शिक्षक बनाना आसान नहीं	मधु कुमारी	17
खेल खेल में	रुचिका	18
किताबों की दुनिया	संजय कुमार	19
क्या छूट रहा प्रकृति प्रेम	अवधेश कुमार	20
किताब	आशीष अम्बर	21
आओ वृक्षारोपण करके पर्यावरण बचाये	राम किशोर पाठक	22

किताबें

दर्द में मरहम सी,
तन्हाई में सच्ची साथी,
खुशियों में साथ रहकर
ये अपने होने का एहसास कराती।
किताबें न जाने
कितने ही अनसुलझे प्रश्नों का हल लेकर आती।

किताबें दुनिया भर की सैर कराती,
नए नए लोगों से मिलवाती
नए स्वाद,नए रहन-सहन का बतलाकर
कहीं भी अनजाना नही रहने देती
किताबें न जाने
कितने ही अनजानों से परिचय करवाती।

इतिहास, भूगोल की सारी बातें
खगोलीय घटना जो दिन में होती या
फिर हो जाती रातें
सबके बारें में बतलाकर
किताबें ज्ञान विज्ञान का अनुसरण कर
जीवन को नई राह दिखाती।

किताबों से दूर रहकर
जो जीना सीखे हैं
मानो वह बिन प्रियतम के
खत प्रेम का लिखे हैं।
किताबें स्वयं का स्वयं से मेल कराती।

रूचिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय कुरमौली
गुठनी सिवान बिहार

डाली के फूल

नीले – पीले , लाल – काले,
प्यारे – प्यारे , भोले – भाले ,
चारू – चंचल और मतवाले ,
भीनी – भीनी खुशबू वाले,
ये डाली के फूल ।

कभी शरमाएँ , कभी मुस्काएँ ,
झूम – झूम कर नाचे गाएँ,
कभी झुक जाएँ, कभी उठ जाएँ,
तो कली पवन संग लहराएँ,
ये डाली के फूल ।

गुप – चुप, गुप – चुप बातें करते,
हँसकर जीते, हँसकर मरते,
इक दूजे का दु:ख – सुख सहते ,
इक डाली पर अनगिन रहते,
ये डाली के फूल ।

बगिया को महकाते जाएँ,
झरते – झरते कहते जाएँ,
जीवन है बस प्यार ही प्यार ,
पतझड़ हो या वसंत बहार,
ये डाली के फूल ।

आशीष अम्बर
उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
प्रखंड – केवटी, जिला – दरभंगा
बिहार

किताब

एनसीआरटी में हे सखिया,
नै छपलै अभी वर्ग नौ के किताब।
जब बच्चा स्कूल पढ़ै लय जेतै ,
बिना किताब केअ घर एतै निराश।
एनसीआरटी में हे
बिना किताब केअ बच्चा स्कूल नै जाय छै,
किताब जल्दी छपबाबू सरकार।
एनसीआरटी में हे
बिना किताब केअ बच्चा कोना केअ पढ़तै ,
त्रैमासिक परीक्षा में कोना बच्चा हेतै पास।
एनसीआरटी में हे
सब बेर रिजल्ट दिन किताब मिलैत रहै ,
ऐबेर कियाअ लेट केलौं सरकार।
एनसीआरटी में हे
वर्ग नौ केअ बच्चा सब बैक- बैक केअ कानै ,
लगाबै सरकार सेअ गुहार।
एनसीआरटी में हे
वर्ग नौ केअ बच्चा अपन अभिभावक केअ कहै,
ऐबेर रिजल्ट सुनिहअ हमर खराब।
एनसीआरटी में हे
बिना पढ़ल नंबर एक सौ में हम्मर
एतै तीस चालीस पचास।
एनसीआरटी में हे
किताब के टेंशन में वर्ग नौ केअ सब बच्चा,
भाए रहल मानसिक बीमार।
एनसीआरटी में हे सखिया
नै छपलै अभी वर्ग नौ केअ किताब।

नीतू रानी
स्कूल -म०वि० रहमत नगर सदर
मुख्यालय पूर्णियाँ बिहार।

कलम से प्यार

यह लेखनी चले निरंतर, तू कलम से प्यार कर,
अक्षर-अक्षर, शब्द-शब्द से, एक नया विस्तार कर।

अक्षर-अक्षर गूँथ जाएँ तो शब्दमाला बन जाएगी ,
शब्दकोश की शान बढाकर, अधरों पर मुसकाएगी,
हृदय कमल खिल उठेगें, मुधुपों का गूँजार कर।
यह लेखनी चले निरंतर, तू कलम से प्यार कर।

काव्य कवि की कल्पना है, सुकोमल हृदय के उद्गार,
मन, प्राण में घुले हुए हैं, स्पंदन में उठती झंकार,
सोया विश्व जाग उठेगा, सिंह विजय हुंकार कर।
यह लेखनी चले निरंतर, तू कलम से प्यार कर।

सच्चे राष्ट्र पुरोधा बनकर नूतन युग निर्माण कर,
सर्वे भवंतु सुखिनः का मंत्र सतत् गुणगान कर,
साहित्य हो जनहित में इस पर गहन विचार कर।
यह लेखनी चले निरंतर, तू कलम से प्यार कर।

नूतन सृजन, अन्वेषण हो, साहित्य का मूल आधार,
युवाओं को मार्ग दिखाए, मानवता पर हो उपकार,
इंसानियत की भावना, जन-जन में संचार कर।
यह लेखनी चले निरंतर, तू कलम से प्यार कर।

रत्ना प्रिया
उच्च माध्यमिक विद्यालय माधोपुर
चंडी ,नालंदा

पौधे सुंदर लहराते हैं

पौधे सुंदर लहराते हैं।
मेघों का जल यह लाते हैं।।

प्राणी भोजन इनसे पाते।
छाया दे हम-सबको भाते।।
फूलों से जब भर जाते हैं।
पौधे सुंदर लहराते हैं।।०३।।

जीवों का सुरभित डेरा हूँ।
पक्षी का सहज बसेरा हूँ।।
सारे ही तरुवर गाते हैं।
पौधे सुंदर लहराते हैं।।०३।।

देते वायु सहज साँसों को।
लेते हैं हर विष फाँसों को।।
देवों सा नित इठलाते हैं।
पौधे सुंदर लहराते हैं।।०३।।

राम किशोर पाठक
सियारामपुर, पालीगंज, पटना, बिहार।

विकसित भारत

हमारे देश भारत का ऐसा होगा रूप,
विश्व भर में यह रहा है, रहेगा सदा अनूप,
सड़कें, बिजली, स्वास्थ्य, हर घर में रोजगार,
शिक्षा में निरंतर विकास, हर घर हो खुशहाल,
नैतिकता, अनुशासन, हर कोई हो संस्कारी,
जन-जन के पास जिज्ञासा, हर कोई सदाचारी,
जन-जन के पास होगा अपना वैज्ञानिक दृष्टिकोण,
उच्च व तकनीकी शिक्षा से भला अछूता रहेगा कौन,
विभिन्न सूचकांकों में यह देश अव्वल आएगा,
खुशहाली के साथ प्रेम व शांति के गीत गाएगा,
धर्म, अध्यात्म, दर्शन, साहित्य, कला, विज्ञान,
सब क्षेत्र में पाएगा यह देश सदा अव्वल स्थान,
भ्रष्टाचार कहीं नहीं दिखेगा, पारदर्शिता हर जगह होगी,
सर्वत्र सामंजस्य, संतुलन दिखेगा, हर कोई कर्मयोगी,
संसद से पंचायतों तक, सेवा तीर्थ से लेकर नीचे तक कार्य ठीक ढंग से चलेगा,
विकास के मुद्दों पर होगी राजनीति, हर कोई प्रगति-पथ पर निरंतर चलेगा,
लोक-हित, देश-हित में कुछ भी करने को हर नागरिक उद्यत रहेगा,
पर्यावरण, खेल, हर क्षेत्र में अव्वल, विकसित भारत सदा सुंदर दिखेगा।

गिरीन्द्र मोहन झा
सेवानिवृत्त शिक्षक

Water wouldn’t sound so melodious

Water Wouldn’t Sound so melodious
If there were no rocks in their way
Rainbows of colors are created
Only if Rains intercept Sunshine Someway
Every Rock in River’s path
is part of River’s lifesong lifelong
Your struggles so constant
Eventually becomes your melody
Rocks carrying moss has more meaning
Than carrying nothing at all
Like life finds meaning in the weight you carry
The pause, The pain, The Rain
Looks momentary Insane
They aren’t stopping you
But Creating Shape-of -you

Ashish Kumar Pathak
Middle school Sarha
Dharhara, Munger

पुस्तक

पुस्तक सदा वरती हमें, शुभ ज्ञान का आधार।
है मित्र सच्चा मान लो, सपना करे साकार।।

अच्छे बुरे के भेद का, देता सहज ही ज्ञान।
दोस्ती करो इससे अगर, होता नहीं नुकसान।।
करता सतत हर-पल सहज, अज्ञानता पर वार।
पुस्तक सदा वरती हमें, शुभ ज्ञान का आधार।।०१।।

हमको मिलाती सत्य से, जिससे गहे सम्मान।
वह बात बतलाती सदा, जो बन सके वरदान।।
है दूर फिर क्यों हो रहा, इससे यहाँ संसार।
पुस्तक सदा वरती हमें, शुभ ज्ञान का आधार।।०२।।

युग आज बदला है मगर, बनिए नहीं नादान।
पढ़िए इसे अब शौक से, यह दे बदल पहचान।।
अक्षर सभी मोती लगे, गोता अगर लें मार।
पुस्तक सदा वरती हमें, शुभ ज्ञान का आधार।।०३।।

राम किशोर पाठक
सियारामपुर, पालीगंज, पटना, बिहार।

शिक्षक बनना आसान नहीं

शिक्षक बनना आसान नहीं
खुद को तरासना पड़ता है
नन्हें हीरे को तरासने के लिए.....

थके हुए बदन में भी
जान डालनी पड़ती है
इनके साथ चलने के लिए.....

हर दिन, हर पल
तरकीब नई लगानी पड़ती है
कुछ नया पाठ सीखाने के लिए.......

खुद को चंदन जैसा घिसकर
जीवन शिष्यों का महकाना पड़ता है
बगिया रिश्तों की खुशियों से भरने के लिए.....

बिखरे मोतियों को
एक माला में पिरोना पड़ता है
पाठ एकता का पढ़ाने के लिए......

सही गलत का फर्क समझाकर
राह सही दिखलानी पड़ती है
अच्छा व नेक इंसान बनाने के लिए.....

सच शिक्षक बनना आसान नहीं
बहुत कुछ करना पड़ता है
उन नन्हें मासूम बच्चों का
प्रेम, स्नेह, भरोसा पाने के लिए......!

मधु कुमारी
उत्क्रमित मध्य विद्यालय
कटिहार

खेल खेल में

खेल खेल में उसने सीखा जिंदगी के गुण,
हार जीत में नही बदलो जीवन के धुन,
स्वस्थ प्रतिस्पर्धा रखो एक दूजे संग
ईर्ष्या नही रखो बात लो यह तुम सुन।

जाति-पांति का भेद भूलाकर खेलो तुम
अमीर हो या गरीब सबको ले लो तुम
मन में नही कोई पूर्वाग्रह कभी पालो,
भाईचारे का भाव अपना लो तुम।

खेल खेल में हर मुश्किल का हल करो,
समस्या कोई भी हो तुम कभी नही डरो,
समस्या को कभी भी बड़ा मत बनाओ,
बेवजह किसी झगड़े में तुम नही पड़ो।

खेल खेल में जिसने जीवन का समझा मर्म,
नही कभी गलत हुए उसके कोई भी कर्म,
ईमानदारी विश्वास सच्चाई को अपनाया
उनके लिए वही रहा सबसे बड़ा धर्म।

रूचिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय कुरमौली
गुठनी सिवान बिहार

किताबों की दुनिया

इसकी दुनिया में गाँव का सरल जीवन है
जिसमें खेतीवारी और दुनियादारी है
तो गाँव का साहू और समाज की मक्कारी भी
होरी जैसा ठगा जानेवाला किसान है तो
दिन रात मेहनत करने के बाद भी
एक अदना सा कम्बल नहीं खरीदपाने की कसक लिए
पूस की रात में ठिठुरता हलकू भी
इसकी दुनियां काफी रोचक है ।

यह बताती है कि इसकी दुनियां में
केवल खेत खलिहान की अर्थव्यवस्था नहीं है
गाँव और कसबा का बाजार भी है
जहाँ जीवन की उपयोगी वस्तुएं उपलब्ध है
तो विकसित विशाल मॉल बाजार के साथ
बड़े बड़े शेयर मार्केट भी
बड़ी रंगीन है इसकी दुनियां ।

यह बताती है इसकी दुनियां काफी रंगीन है
जिसमे काल्पनिक कहानियाँ भी है
तो ज्ञानवर्धक रोचक जानकारियाँ भी
आधुनिक वैज्ञानिक खोज भी है
तो विज्ञान की नवीनतम शोध भी
चन्द्रमा पर पहुँचने की गाथा है तो
अन्य ग्रहों पर कृत्रिम उपग्रह भेजने की विजय पताका भी
यह बताती है कि इसकी दुनियां रोचक और ज्ञानवर्धक है

किताबें पूछती है हमसे और आपसे
क्या नहीं है हमारी दुनियां में
वह बताती है हमको और आपको
वह बुलाती है हमको और आपको
मोबाइल छोड़कर थोड़ी मेरी दुनियां में आओ
हमारे साथ थोड़ा वक्त बिताओ
केवल सफेद और काली नहीं है हमारी दुनिया
हमारी दुनिया भी रंगीन है
जिसमे तुम्हारे लिए संभावनाओं का भंडार है ।

संजय कुमार
जिला शिक्षा पदाधिकारी
अररिया

क्या छूट रहा है प्रकृति प्रेम

वो पीपल की ठंडी छाँव, अब बस यादों में बसती है,
विकास के इस भागदौड़ में, सांसें अब बहुत सस्ती हैं।
वो गौरैया का चहचहाना,
वो भोर का सुहाना मौसम,
सब कंक्रीट के जंगल में खो गया अब?
गमलों में खिलते हरियाली को, हम प्रकृति प्रेम मान बैठे हैं,
प्लास्टिक के फूलों में, हम अपना लगाव मान बैठें हैं।
एसी और फ्रिज को अपना स्टेटस सिंबल मान बैठें हैं।
हमने समंदर को कचरे से भर दिया,
बादलों का रास्ता धुएँ से डरा दिया।
आजकल मछलियाँ अब पानी में नहीं, एक्वेरियम में तैरती हैं,
लैदर और प्लास्टिक के फैशन में युवाओं को प्रकृति से दूर करती है।
ये जो छूट रहा प्रकृति प्रेम हमारा, इसे फिर से जगाना होगा,
बच्चों और नई पीढ़ी को सतत हरित विकास के मंत्र को अपनाना होगा।
जन जागरूकता और प्रकृति प्रेम से बनेगी मिशाल ,
जिससे देश में होगा जन जीवन खुशहाल।
आखिरी सवाल हर साल किसी दिन विशेष को मन मे आता है ,
क्या छूट रहा प्रकृति प्रेम ?

अवधेश कुमार
उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय
रसुआर , मरौना , सुपौल

किताब

सब चीजों सबसे प्यारी,
होती है किताब ।

उलझे – उलझे हर सवाल का,
देती है जवाब ।

इसको पढ़कर बन जाता है,
मूर्ख भी विद्वान ।

अनपढ़ शिक्षित हो जाता है,
पा लेता है ज्ञान ।

कोई छोटी, कोई मोटी,
होती है किताब ।

कोई कठिन तो कोई सरल,
होती है किताब ।

पढ़ना – पढ़ाना अच्छी आदत,
सबसे अच्छा शौक ।

अध्ययन से बनते हैं इन्सान,
इससे न कर खौफ ।

किताब की महिमा है,
कितनी अपरम्पार ।

इसकी तुलना न कर सका,
यह पूरा संसार ।

आशीष अम्बर
उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
प्रखंड – केवटी, जिला – दरभंगा
बिहार

आओ वृक्षारोपण करके पर्यावरण बचाये

धरा श्यामली कुंठित रहती, मिलकर उसे हसायें।
आओ! वृक्षारोपण करके, पर्यावरण बचायें।।

तरुवर हमने जमकर काटे, धरती हुई विरानी।
हरी-भरी धरती की केवल, सुनते अभी कहानी।।
पुनः धरा पर वृक्ष लगाकर, हरियाली लौटायें।
आओ! वृक्षारोपण करके, पर्यावरण बचायें।।०१।।

आग उगलने वाली गर्मी, तन सबका झुलसाती।
हाय! प्राण अब निकल न जाए, बरबस मुख में आती।।
ढूँढ-ढूँढकर छाँव तलाशें, चैन जहाँ हम पायें।
आओ! वृक्षारोपण करके, पर्यावरण बचायें।।०२।।

ऋतुएँ भी परिवर्तित अब तो, बेमौसम सब होता।
फसल हमारी मारी जाती, विवश कृषक है रोता।।
हुई प्रकृति क्रोधित अब हमसे, चलो आज समझायें।
आओ! वृक्षारोपण करके, पर्यावरण बचायें।।०३।।

हम विकास में अंधे होकर, नियम प्रकृति का भूलें।
मनमानी इतनी कर बैठे, जिससे चुभती शूलें।।
वृक्ष लगाकर शंकर जैसा, हम हाला पी जायें।
आओ! वृक्षारोपण करके, पर्यावरण बचायें।।०४।।

कंद-मूल समिधा जिससे है, पर्ण पुष्प जो देती।
प्राण वायु को शुद्ध करे जो, हर विकार हर लेती।।
तरुवर सच्चे मित्र हमारे, इनको गले लगायें।
आओ! वृक्षारोपण करके, पर्यावरण बचायें।।०५।।

मेघों को आकर्षित करके, वर्षा जल को लाते।
प्रकृति संतुलित तरुवर रखते, जन-जीवन मुस्काते।।
हरा-भरा हो चमन हमारा, जिससे हम हर्षायें।
आओ! वृक्षारोपण करके, पर्यावरण बचायें।।०६।।

झेल रहें जो आज समस्या, तरु निदान उसका है।
ऐसे जो हालात हुए हैं, दोष बता किसका है।।
खूब लगाना वृक्ष हमें है, हम संकल्प उठायें।
आओ! वृक्षारोपण करके, पर्यावरण बचायें।।०७।।

राम किशोर पाठक
सियारामपुर, पालीगंज, पटना, बिहार।

पद्यपंकज

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

Reg. No. BR/2025/0487469

Teachers Of Bihar

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ? आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ? नीचे दिए गए वेबसाइट, ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े |

writers.teachersofbihar@gmail.com
padyapankaj.teachersofbihar.org
+91 7250818080 | +91 9650233010

पद्यपंकज के सभी अंकों को पढ़ने के लिए QR Code को स्कैन करें